

विचलसंचालयानां, १३ गुलिधियाप्रहादावनं, अष्टनेध्वर्यपदवेलानां, १४ वज्रानंदनं, १५ कलपां विष्ठा
 नयुका, १६ आनंदारहे, १७ वलस, १८ क्रमनिचूनयां जायाः मनसः, १९ वृत्तदेवपनिस्पनं, २० आनाहो, २१ ॥ २२ ॥
 कर्मनं हागयायमालधर्कः मनसहालपां, २३ क्रपप्रावर्गिनां नया नृपजोरुन, स्वहायखनां, २४ विह्वसि
 रुयां, २५ क्रपप्रावर्गिनां नियाकं, मनतयां, चानकिनं, वनिहृदायातां, स्वआनंदन, वललपां, २६
 नरुलं, २७ ॥ २८ ॥ प्रकाननः पप्रावर्गिनां निरुयाः जोरुनस, यथा २९ ॥ ३० ॥ वललपां शलं, ३१ ॥ ३२ ॥ हाजानंद
 दहिकुक्कपनि, ३३ वलसदेवयासं जागर्नः, ३४ क्रपप्रावर्गिनां निरुया, गरुसदयां शस्यंलिः गुलाजिला
 दयां, ३५ वलसगुहवलासलानकं, अर्गनदिव्यगुहदं, कर्मादकं, ३६ ॥ ३७ ॥ हाजानंददिक

॥मनि॥
॥३०॥

पनि गार्थि कृमान जात रुल धल सा. ॥ कान. काम देवडा समान रुया चान क. अर्गे नृप. नृद निवृप रुया
चान क. थर्थि क पूरु कृमान जात रुयाडा. माहो हर्ष मान या नाडा. मर्जा न थर्. जात कर्म या नाडा. हर्. माल का
कर्म या नाडा: यथा टम नाऊ कृमान धर्क नाम प्र थान या नाडा गली ॥ ॥ थर्न लिथ क दिव्य कृमान वाल सया
न. च्या क इदू मा पनि न या डा. लहिका डा गली ॥ गथ धल सा. नि क स्या त इदू ती क गु लाला विया डा गल ॥ नि क
स्या त उम सल न क गु लाला: ॥ हर्न नि क स्य न मल म. गु लाला ग या न क गु लाला ॥ हर्न नि क स्या त. यडा २ थ क्ति न
क गु लाला ॥ थर्न प्रकार नृष आनंद न पति पाल या ना डा गली ॥ थर्न लस थ कृ वाल स थ कृ प क या चंद मा थ
कि कि क्रिया न डा धि क रु गली ॥ थर्न लि क थ हर्ष डाद द या डा डा स्य नि. श्री गन या क आखल सन का गी ॥ ॥

॥रुद॥
॥३०॥

थर्न लस गृह वला मला न क. श्री गन न. क कार्ग. ख कार्ग. ग्व दल स चा या डा दिली ॥ थर्न लस ग थ गन न सन अ
थर्न ला ना डा: समर्क आखल सक ती सय का डा: चतु षष्टि विद्या या सक ती सय का डा काली ॥ ॥ थर्न लस
थ कृ प आ न म नाऊ कृमान आखल स डा गु ख ना: श्री मनि चून ना जा प्र मुख सहा लोक सक ल्य भू सी श या
डा: माहा आनंद न चा न श ली ॥ ला आनंद रि क पनि: थर्न लस. कृ क या दि न स: स का अरु मि या दि न रु स्य
लि: श्री मनि चून ना जा या मन स धा धि हान ला य गु लि स हा स चा या डा: थडा गु अ न पू न नी पि हा वि का
ना डा: मं वि पर मान सक ल प्र मा लोक पति सक ल्य मून का डा ॥ थु गु लि अरु मि वरु स द रि य धर्क मन स हा
ल या डा: सत्व सं सा न स. वस ल या डा चान प्रा नि सक ल्य. उद्धान या य धर्क मन स हा ल या डा. थडा गु सा क रु

॥मनि॥
॥३९॥

माहनगनया प्रजालोकयनि सकलं धंधा धावनया नाडा वायकल ॥ हा प्रजालोकयनि धनिया दीनस नता
नीमालका निष्ठावानः कर्म हाऊनया ना नाडा मदीलसडा याडा धानमालधक वायकाडा ॥ श्रीमनिचूनया
जा धाडीनं स्वर्णयासिहासनस विकानाडा सकल प्रजालोकयारखाल स्वयाडा आहादयकल ॥
हा ससाव प्रजालोकयनि धनिकिग वचन खकता हरुन गधधलसा ॥ हलाकस पनलाकस असु
माहालय भाचक यात आडा धनि कपनिस्यन यायमाल गधधलसा ॥ शुचिनेमयास्य दानपूषया ना
आमाहाउरुम शयाडा धानगु उपा धधधयागु अकृमिबुन याहून हाहा ससावलाकऊनयनि धनया
पूनेन ॥ हजमस ऊनधनसंगान नवनल मूळधु चतुषष्टि विहिनं संपूर्ण शयाडा अकृतेखर्यला

॥बु॥
॥३९॥

नाडा धनगुल स्व विमलाय मन गू कायाकपनिस्यन धाधिगु धर्मकर्मवूनया नाडा दानपूषया अ
मालधक आहादयकाडा अतंगप्रकावया धर्मयाख कनाडा सकल प्रजालोकयनिसया चिरुवा
धरुयकाडा धमन सिहासननंदनाडा सकल प्रजालोकयनि लिडा २ तयाडा धन साकतुमा
हानगन कुचाक उलाडा नाऊगुहंस दहा विकानाडा धासिपद्मा वनिनानियात अतंगप्र
कावली दानधर्म वायगुधः सकता कनाडा मानंदनी विकार ॥ ॥ हा मानंदरि क कपनि ध
वलस चतुदिसायादिगपाल नागा धयाधि गयिधि धलसा हा मानंदरि क कपनि ॥ श्रीविन
धक धया ॥ श्रीविनपाऊ धया ॥ श्रीकवनधया ॥ श्रीवेधवनधया ॥ धनधक लाकपाल

॥ नमः ॥
॥ ३२ ॥

देवतापतिसया ॥ विधिं तां कृतिमनया नाडा ॥ १ ॥ क्रमनिचूनना जायाः च त्रिषु स्वयं धर्मं मनस हलपा
डाडली ॥ ॥ हा आनंदहि कृ कपनि ॥ २ ॥ वलस थूगु सी के तु माहानगनस ॥ ३ ॥ नकलडायाडा स्वक ने
लस थूगु लि दे नायः मिहडा ॥ ४ ॥ जा आल्यमाननं नज प्रकाश शयाडा चान ॥ ५ ॥ नया काननं थन
दिगपाल देवतापतिस्यन ॥ आकासमार्गनं वास डाडा वलस ॥ ६ ॥ नसी के तु माहानगनया ॥ दडा क
लंघना या नाडा न मरु याडा ॥ ७ ॥ या य ह मासिया डा ॥ ८ ॥ २ मनस अदान विलु या नाडा चान ॥ ९ ॥
वलस दिगपाल देवतापतिसया ॥ विधिं चिरु न हलप ॥ हं ॥ स्व न कृ काननं थधिं गुरु कुल ॥ १० ॥
दिगपाल देवतापतिस्यन ॥ आकासमार्गनं डा न मकि या चो ल गल व ध शडा गल या डा धली ॥ हा दिगपा

॥ नमः ॥
॥ ३२ ॥

लयनि धनि मित्रि सनं सर्वगुलवनसं हि तु हिला डा ॥ आकासमार्गनं दध द धातन सकल्यं लंघना या
नाडा या थुका ॥ १ ॥ धनि थूगु लि सा के तु माहानगनस ॥ गध लंघना या य म रु न ध के ध या डा विधिं चिरु
सविस्मय चायाडा थूगु धाननं लिहा डा नाडा ॥ हना सनं ॥ या य शिं स ध या स्वर्ग ए व न स डा नाडा जी वूंद
नाजा या सहा स ॥ २ ॥ नकल डा नाडा ॥ ३ ॥ दिगपाल देवतापतिस्यन ॥ ४ ॥ क्रमनिचूनना जा यागु ॥ महि मा
विस्लानय सक नां क नाडा ॥ ५ ॥ दु नाजा या क विन गिया न ॥ ॥ हा वूंद नाजा धनि जिपनि सया विन गि ड
सविष्का रु न ॥ गध धाल सा ॥ ७ ॥ धनि जिपनि चतु दिगया दिगपाल धाय का डा य क्र सनं आकाश मार्ग सः
सर्वगुलवनसं हि तु हिला डा अन ग य व न आदि ॥ १० ॥ न ध नां न द क लंघना या य रु या थुका ॥ ११ ॥

॥ मति ॥
॥ २३ ॥

चिन्तां कुरु माहा नगन कुरु गिलि लंघना याय मरु याडा. आनाने लिहाडा या थुका ॥ हदव नाज वूंदु थु न
सुंके कुरु माहा नगन स गी मति चून नाजा प्रमरु वतं मंगि. प्रमान प्रजाला कपनि स्यनः ॥ ३ वृध धर्म सद्य
नाम कयाडा सा विरुन दान पूंय या नाडा. ॥ ३ अमा घपा गला क स्व नया. अरु मि वु न या नाडा थ
न थुका ॥ हा वूंदु नाज थु गिलि वु न धर्म या प्र हा वन. थु गिलि दं नायं मि काडा थु न ज प्र का ल श या डा
वान थु का. थु पति स्यन धाल साः स्वर्ग आ य गु ल कि न क या डा चान थु का ॥ हा दव नाज वूंदु. थु न स्व म
वति न रु य म न डा. स न २ न व डा थु का. आ डा तं लि अव स न क ल पा ल या. अम ना व ति वूं डा स न स्थि
न रु य म र व त. अव स्य न स्वर्ग ला क जि न य या ना डा द व ला क पि न क्का या डाः म नू व्य ला क प नि थ हा

॥ वन ॥
॥ २३ ॥

विमदि २

आ या डा चान था यि न थु का ध कं थ क दि ग पा ल प नि स नः थु ग प्र का न नं या न ॥ ॥ हा म न द रि क क प ति
थ व ल स थ न च नु मा हा ना ज प ति स या. व च न हा वा न ना डा ॥ ॥ हा वूंदु ना जा या म न स अ नू ल न आ थ य
चा या डा. स क ल द व ला क प नि स या र वा ल स्व या डा आ हा द य क लं ॥ ॥ हा द व ला क क प नि स नं द क न ॥
ग थ ध ल सा. थ क गी म ति चून ना जा ध या क. अ ति ध र्मा ला रु या डा. ग व क्क स नं गु ग व लु क र न. उ गु
व लु क रु नं दान वि या डा. स ल व्वा लि या उ प न स. क नू ना ग या डा. अ नं ग व लु क दान वि या चान थु का
ह नं स सा न उ क्क न या य या कान न स. दान सा ला द य का डा. माल का सा मा गि स क नां त मा न या ना डा सा
वि रु न दान पूं य या य गु लि स. पूं हा ला श या डा. इ रि. द रि द या उ प न स क नू ना ग या डा. दान पूं य या ना या

॥ मन्त्रः ॥
॥ ३४ ॥

प्रहवर्नः ॥ श्री मनिचून राजा ॥ यका ॥ ४५ ख अनन्दनं हक लपा ॥ चानधू काः ॥ एदव लोकपतिः ॥
॥ श्री मनिचून राजानं याना ॥ चानगुः ॥ अहमिधर्मवर्ह याप्र हवर्नः जितययाना ॥ अहमम
वर्नजिगु अमला वति पूनः जितययाना ॥ जिगुलि ॥ ४६ दामन का कायि ॥ धर्कः मनसः एलपा ॥ देव
राजः ॥ ४७ दयारा मा दना ॥ सकल देव लोकपति अहू ते अ ॥ ४८ य चया ॥ चानः ॥ ॥ ए अनंदरि
शकपतिः ॥ ४९ प्रकाशनं सकलः देव लोक या सहा श्या ॥ विधि १ खहाना ॥ चान वलसः अकास
मापुर्नः ॥ जा जाले मान श्या ॥ चानगुः ॥ तज जातिः ॥ गुलिनः ॥ व्याफ मान श्यर्कः ॥ सकरिनं खया ॥ ॥

श्री गणेशाय नमः
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ बुद्ध ॥
॥ २४ ॥

[illegible]

॥ बुद्ध ॥
॥ २४ ॥

॥ नमः ॥
॥ ३७ ॥

[illegible]

स्वर्गस्वर्गसंभारोऽयं याग तयात्र याताऽं चान्धिकाः ६०० इन्द्राज १०० गंधाकात्रनर्त सक्ता मतिचूदनाजा
नं याता गुप्ता धर्म या प्रणवर्ग स्वर्गाधिका धर्मा अष्टादशकोटीः १०० प्रवृत्ता गत्वा नर्तार्ता १०० नक्षत्राऽं
नी ॥ १०० वेंलस ००० इन्द्राजा तं कल सः प्रवृत्ता यावचन राखा इन्द्राऽं अष्टादशकोटी चिह्न स विस्मय कृपा
००० अष्टादशकोटी कृपा ००० चान् ॥ ००० ॥ ००० गिष्ठी मतिचूद वदान ००० य ००० य ॥ ३ ॥ ००० नः
मात्र ००० याय ॥ ००० अज्ञानद हि कृपतिः ००० नलिः ००० क तु माहा नगत्र सः ००० मतिचूद नाजान् ००० कृपा
नात्रि सः ००० मतिचूद चिह्न लपा ००० अली ॥ ००० स्वर्ग अष्टादशकोटीः ००० स्वर्गति त्रिभिः स्वर्गनः ००० अष्टादशकोटीः ०००

मनिः॥
॥२७॥

ॐ गुः ऊरु कर्म यायमाल धर्कः मनसं ललपाडा चानी ॥ ॐ न नात्रिकालवित्तय रुस्मतिः प्रलकाल दिन रुस्म
लिः प्राप्तालातकी दनाडाः ॐ आ गुनू आहितः आहिक ग्वय क्रः ॥ श्रीमन रुस्तकलहा याडाः गुनू याक विनति
यातीः ॥ ॐ गुनू आहित जिनरुलसा निर्गत ऊरु याय धर्क मनसं ललपाडा चानी नाः ॐ न ऊरु याय यात सा
मागीः रु रु विहि विधन मालाडा चानः माल क आहा दय रु स्म विष्का रुतः धर्क श्री मनि चूद ना जान अ
हा दय कर्ल ॥ ॥ ॐ न माहा राजा या आहा न नाडाः गुनू आहित न आहा दय कर्ल ॥ न माहा राज श्री
मनि चूनः धनिदल माल स्मर्न हिन गु कार्य याय गु ॐ न यास्म विष्कातः धर्क गुनू या मनसं अतिप्रसगा

॥ चूद ॥
॥ २७ ॥

याडाः साकु याप्रम न ॐ ऊरु कर्म यायतः मालका विधिविधान सकर्ता चायाडा विली ॥ ॐ वलसः श्री मनि चून ना जा
नीः मीतिः पनमानः सकल प्रजा लोकपति सकर्त मूनकाडाः आहा दय कर्लः ॥ ॐ न मीति पनमान सकल प्रजा
लोकपति आडा जिन रुलसाः निर्गत ऊरु याय धर्कः मनसं ललपाडा चानी ना ॐ काः आडा रुपनि स्मर्न ऊ
रु याय यातः मालक कर्म विधिविधानः सकर्ताः गयाय याताडाः हयमाल धर्कः मनि चून ना जान अहा दय
कर्लः ॐ न माहा राजा याः आहा दनाडाः मीति प्रमान सकल स्मर्नः माहा राजा याः आहा ॐ न ऊरु कर्म याय या
तः गुलित विधिविधान पूर्व क सकर्ता गयाय याताडा हर्लः ॥ ॐ न आनंद रिह पतिः ॐ श्री गुः समयसः ॐ वून या

दिनसः २५ श्रीमन्निचूनराजायाथसुर्जीकनशक्रस्मर्तः शक्रवस्तुकैर्योद्धकैरुपयुक्तः ॥ गन्धधाल
साः ॥ ज्ञायां कृष्णस्य गन्धधकंधालसा ॥ हं माहानाजथानि कुलपालशसां दानाधनिधगुरवठं नाज ॥ सकलसंसा
नव्याफरुशगुरवधूकाः ॥ २५ गैयानिमिर्हिनं जिमिसनं कुलपालयाकः ॥ कुगावस्तुकैर्योद्धकैरुपयुक्तः ॥ गन्धधालसा
का ॥ हं माहानाज गन्धधालसाथनिजिष्काचक्रदयाउचानधूकाः ॥ २५ प्रयिधालसा मलविद्यमधूनी
हं माहानाज श्रीमन्निचूनकूयायः ॥ थनिजिकंधालसाः धनद्वयं हूं मदयाउचानधूकाः ॥ विवाहालयानाज
कैत्यादानविद्यमरुत ॥ हं माहानाज ॥ २५ गैनिमिर्हिनं थनिजिनं ॥ कुलपालयाकः धनद्वयं चित्ताय रूनाज
यनाः जिष्काचकैत्यादानविद्यधकः ॥ मर्नरालयाउजिगयाथूका ॥ हं माहानाज ॥ थनिजिउपनसकरुता

॥ चूद ॥
॥ २० ॥

कृपा नवाशुभसंनक्षत्रमालधकः ॥ १ ॥ हनं भ्रूवां क्रनरुन
 धलः हमाहनाशुभनिजीयतिसयाविनते दसविकाहनः गथ्य कालसा कृपाय थनिकि दनिद
 नसतश्याशु थशुसनीनस नागव्याधितंकयाशु चानथका थनं नागव्याधिसां नयायया कानन
 सशुभसहाय ननायं दाममदयाशु दामरुनि हनं धकं जिथनशुयाधक थक्रवां क्रननं हनाशुच
 नः ॥ २ ॥ हनं भ्रूवां क्रननं विननियानं हमाहनाशु थनिकितं कृलपालयाक हनाशन धकं श्या
 धुधालसा कि कायमचाहु क्रदयाधान थकायमचाया न साहनं जा नाशु यनकलः जाशु थक्रका
 यमचालिण्यायया न धनमदयाशु दामविराय हनं धकं श्या हमाहनाशु थनयातिमिहिनं

॥ प्रति ॥
॥ ३८ ॥

दामहतिरुतमूधकः दामरुतागोचानं ॥ ३ ॥ हनंरुक्रुवां क्रननंभालः होमाहाताज कयायः
थनिजिगृतिमनूतागोतयाक्रु प्रतिबुता धर्मसधानक्रु गिजनरुक्रु दयकागोतयाः रुक्रुतला
तधालसा थनियानागिसचंदाल पापियू मूक्रुक्रु गीयागोवूनवूयागोयनथूका ॥ होमाहाता
जागोताथ क्रुक्रु कला कलिख्याययात धनचिहाय रोनधकं गीया होमाहाताज धन
चिहाय विगो धकं रोनगोताचानं ॥ ४ ॥ हनंरुक्रुस्यतधालः होमाहाताजमनिचून कयाय थनिजि
धालसा काथरुयागोवसगोतः कमायायमरुता थननंथगोपानउक्रुनयाययातः धनसंपतिमदयागो धन
द्वयचिहाय रोनधकं मनसहालपागोतागो धकं धयागो रोनगोताचानं ॥ ५ ॥ होमाहानंदरिह यनिथवलस

॥ चून ॥
॥ ३८ ॥

थनंहाक्रुवां क्रनरु यनिस्यनं धगुवदनागो श्रीमनिचूननाजानंः रवक्रुसर्न गुगुधकं रोनः उगुप्रकानंदान
वियागोताक्रुवां क्रनयनिसया रवहनागो थगोनूगलमक्रुनकागोः स्वनक्रुक्रु रवारुका मिखास रव
विगोयकागो थगोपूर्वजमयावलमनकागो रोनली ॥ थवलस थनप्रकाननं श्रीमनिचूननाजायामिषा
नंरुविहायका थगोगुथहाक्रुवां क्रनयनिसनंमनागोः थगो २ मनसजृतिधीदाकयागो थक्रुमनिचून
नाजायाहगोनचानागोविननियानं ॥ ॥ हदवहमाहाताजमनिचून थनिकूलपालयामिषानंखावि
कायहायकाविधानाः थनिजि यनिस्यं धनद्वय रोनगोतलधका नूगस्यानाला विद्यमालधकं मनसगपा
नालाधकधालं थवलस थनवां क्रनरु यनिसया रववातनागो थक्रुसगुहानिबुद्धिवनः श्रीमनिचून

॥ मनि ॥
॥ ३५ ॥

नाजान च हाक्र बां क्रनयारखालसाया आहा दयकलं ॥ ॥ पंच बां क्रनरूपानि कृयायः थथिन अहा गि
नाजाजि. किथि अहा गि मवर्गुमद्र. कृयाय थनि कि रवना आ दया कृया दयमाल धकं थनि कि नं विया गुदानः
द्वयं नं. संताखमरुया आ. कलपालयानि ल्या हा वि कायू या रयनं. चिरु संगा खयाय मरुयू मा धर्बः मनस
धंदा कया आ. कलपालयानि रवना आ. अतिकृता चाया आ जिषाया थकाः ॥ ॥ हा बां क्रनरूपानि. कि मननं स्व
ज्ञानं दान विया गुलि. दान इमनं. इषिद रिड. जाचक पानि सकल्यं संगा ययाय रुयमा धक. मनस लालपा आ
थाना ॥ हा बां क्रनरूपानि थनि कलपालयिं हा क्र स्यातं. आ हरु का २ धन संपनि विया दाय थका. थनि कलपाल
यानि स्यां जाना वि का रुने धक थन. श्री मनि चून ना जानं आ ग्या दयकलं ॥ ॥ थवलस. थन मनि चून ना जाया

॥ चून ॥
॥ ३६ ॥

आ ग्या न ना आ. थन पंच बां क्रनरूपानि. मनस थनि हर्षमान या ना आ. मनी चून ना जाया. चिरुया प्रहा वष ना आ.
थ आ २ चिरु अति शा. थन चाया आ चान ॥ ॥ थवलस श्री मनि चून ना जाया मनस. अर्गुन हर्षमान या ना आ. सा
ब्धे ज्ञानं थ आ क दूग. धन इव सक नां ह या आ. थन हा क्र बां क्रनया ग. जान. रुक् २ दान विया आ. हा क्र बां क्रनया
चिरु संगा यना या आ कानं ॥ ॥ थवलस थन पंच बां क्रनरूपानि स्यनं. थ आ २ आत्मा चिरु संगा यना या आ. श्री
मनि चून ना जाया हस्तनं. धन दय दान क या आ. थ क्र ना जा या खाल स्वया आ. अत्र गप्र काननं आसि र्वा द विया
अनि न स ना या. थ आ २ थ स संलि हा आ नं ॥ ॥ हा जानं द रि कृ यानि. थनं लि मं गि प्रमान सकल प्रजाला कयानि
सनं. गुन् शा हि न श या आ हा ठ ना आ. सा मु या प्रमान थनं. विधि पूर्वक सक नां दय का आ. सां क तु मा हा न ग न या

॥ मन्त्रि ॥
॥ ४० ॥

नागगृहसः नागायामंदिलसः ऊहू सालादयकाऽऽदकासा मागिसका नागानया नागहलं ॥ ॥ गं जानं
दहिरु कपनि रू वल्लुक धलसाः नयगु गानगु नित्यगु पूनगु उभ ऊा जाकि चतुषष्टिविह आदिनं नाना
प्रकाशयावल्लुक शुबलू नृप हिमंन अरुधातु सल किमि उथ लासा हाग वल्लुदान सुबलू दान दमि
दान गृहदान अगंसकतां नयानया नागा महा नागाया असता नागा मणिप्रमान सकस्यानं विना नियातं ॥ ॥
हमाहानाज अनिकलया लया आह्वय ऊगया विधिपूर्वक सकतां वयानया नागा हयधनथूका हमाहा
नाग हतं नाना सासु विद्या सता हिरु कपिं वां कनपिं तिर्थक कनपिं अगंसमलं डायता ऊग कर्मयाय अ स
अकलता याता चानं ॥ ॥ हनं इरिब दनि डपिं अविगलपिं सकल्यं अनकलता याता चानं अवलसमंती ॥

॥ वन ॥
॥ ४० ॥